UNIVERSITY SCHOOL OF EDUCATION

Guru Gobind Singh Indraprastha University

EDUSPARKS

Volume- 3.0

Hindi Literature

Art Corner

English Literature

Creativity Corner

News Corner

ABOUT
University School of Education, GGSIPU

The University School of Education aims to facilitate studies in all emerging areas of Education such as Educational Management, Planning and Finance, Teacher Education, Educational Technology, Inclusive Education, Distance Education etc. to prepare teacher educators who are well versed with the skills and competencies of effective and efficient teaching skills and research. The school shall foster a climate of life long learning and empower individuals to be torch bearers of social change by transforming the very face of Teacher Education. The school has emerged as a role model with respect to the pedagogical interventions ,innovations in research and creation of enriched teaching –learning environments which ignite minds through challenge and feedback. The school fosters the growth of the individual and the collective through constructing knowledge collaboratively and creating an open environment which nurtures the spirit of progressive Teacher Education.

VISION:

The school aims to empower Teacher educators with knowledge and skills of the 21st century, nurture passion for research and teaching and imbibe the spirit of social inquiry to ensure harmony and prosperity.

MISSION:

University School of Education shall function as a cradle to prepare motivated and dedicated educators, policy planners, administrator and most importantly life long learners who shall function as a catalysts to create and sustain learning which communicates and promote equality and equity in education.

University School of Education
Guru Gobind Singh Indraprastha University
EDUSPARKS- The Digital Magazine

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
(Let the noble thoughts come to us from all directions)

Edusparks/USE/June2020/ Vol:3

Letter to Readers/ Viewers

Dear Readers,

The University School of Education, GGSIPU, takes the pleasure to present before you its digital magazine- ***EduSparks***. The magazine is envisioned to be an exciting arena to engage in various activities, exchange ideas and enhance one's creativity. This initiative has been inaugurated and launched by our honourable Vice Chancellor of GGSIP University, Padam shri Professor (Dr.) Mahesh Verma, on May 16, 2020.

EduSparks showcases not just literary inputs but is a vibrant mix of song, dance, art and numerous other pursuits through a truly multi-media platform. The magazine has the following segments:

- Newsroom (Samvad)
- Activity corner (Expressions)
- Literary segment (Rachana)

We appeal to all faculty members and students of USE and its affiliated colleges to enjoy the thrills of this innovative digital magazine, as well as enthusiastically contribute to it. The following guidelines are to be noted:

- Contributions are welcome in both Hindi and English.
- Please send your original work with a self declaration that it is so.
- Mention your full name, designation, institution
- Videos should be in MP4 format only.
- Audio should be in MP3 format only.

Thanks and appreciation.

Professor Dhananjay Joshi
(Dean and Editor- in- Chief of Edusparks)
University School of Education
GGSIP University, Dwarka
To send your contributions and for any further queries, please contact us at:
E-mail: edusparkuseggsipu@gmail.com or professordjoshiipu@gmail.com

EDUSPARKS- THE DIGITAL MAGAZINE OF UNIVERSITY SCHOOL OF EDUCATION, GGSIP UNIVERSITY

- **PATRON**
- PROF. (Dr.) MAHESH VERMA
- PADAM SHREE AWARDEE
- Dr. B.C. ROY AWARDEE
- VICE CHANCELLOR
- GURU GOBIND SINGH INDRAPRASTHA UNIVERSITY, NEW DELHI

- **ADVISOR**
- SH. RAVI DADHICH
- REGISTRAR
- GURU GOBIND SINGH INDRAPRASTHA UNIVERSITY

- **CHIEF EDITOR**
- PROF. (Dr.) DHANANJAY JOSHI
- DEAN, UNIVERSITY SCHOOL OF EDUCATION
- GURU GOBIND SINGH INDRAPRASTHA UNIVERSITY, NEW DELHI

STUDENT COORDINATORS:

CHIEF STUDENT EDITOR:

1. Natasha Goel
2. Sonia Mojumdar

TECHNICAL TEAM:

1. Suprita Sinha
2. Dimple Sehrawat
3. Mansi Jain
4. Yamini Arora

EDITORIAL TEAM:

1. Savita
2. Neha Goyal
3. Astha Kotnala
4. Tripti Singh

MARKETING:

1. Sandhya Udaar

STUDENT'S CORNER

LITERARY SECTION

ENGLISH, HINDI AND PUNJABI

ਕੋਈ ਜਾਵੇ ਨਾ ਪ੍ਰਦੇਸ ਨੂੰ

ਕੋਈ ਜਾਵੇ ਨਾ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ
ਜੇ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਮਿਲੇ,
ਰੱਜ ਕੇ ਪੂਰਾ ਸਤਿਕਾਰ ਮਿਲੇ, ਫਿਰ ਛੱਡ ਕੇ
ਸੁਹਣੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ, ਕੋਈ ਜਾਵੇ ਨਾ ਦੇਸ ਨੂੰ।

ਜੇ ਧੋਖਾ ਠੱਗੀ ਨਾ ਹੋਵੇ,
ਕੋਈ ਹੱਕ ਕਿਸੇ ਦਾ ਨਾ ਖੋਵੇ,
ਹਰ ਪਾਸੇ ਖੂਬ ਪਿਆਰ ਮਿਲੇ,
ਫਿਰ ਛੱਡ ਕੇ ਸੁਹਣੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ, ਕੋਈ ਜਾਵੇ ਨਾ
ਦੇਸ ਨੂੰ।

ਜੇ ਲੀਡਰ ਸਾਨੂੰ ਲੁੱਟੇ ਨਾ,
ਕੋਈ ਵੈਰ ਵਤਨ ਤੋਂ ਪੁੱਟੇ ਨਾ,
ਚੰਗੀ ਕੋਈ ਸਰਕਾਰ ਮਿਲੇ,
ਫਿਰ ਛੱਡ ਕੇ ਸੁਹਣੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ,
ਕੋਈ ਜਾਵੇ ਨਾ ਦੇਸ ਨੂੰ।
ਜੇ ਸੱਭ ਨੂੰ ਹੀ ਇਨਸਾਫ਼ ਮਿਲੇ, ਹਰ ਬੰਦੇ
ਦਾ ਦਿਲ ਸੱਫ਼ ਮਿਲੇ,
ਫਿਰ ਛੱਡ ਕੇ ਸੁਹਣੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ,

ਕੋਈ ਜਾਵੇ ਨਾ ਦੇਸ ਨੂੰ ।
ਨਾ ਪੈਸੇ ਲਈ ਜ਼ਮੀਰ ਵਿੱਕੇ,
ਨਾ ਦੀਨ ਅਤੇ ਇਮਾਨ ਵਿੱਕੇ
ਫਿਰ ਛੱਡ ਕੇ ਸੁਹਣੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ, ਕੋਈ ਜਾਵੇ ਨਾ
ਦੇਸ ਨੂੰ।

परलिन कौर

कोई भी प्रांत में नहीं जाता है

देश में कोई नहीं जाता
अगर देश में रोजगार मिल जाए,
संतुष्ट को पूरा सम्मान मिले, फिर सुंदर
देश को छोड़ दें, किसी को भी देश में नहीं
जाना चाहिए।
यदि धोखेबाजी धोखाधड़ी नहीं है,
किसी के अधिकारों को मत खोना,
हर जगह बहुत सारा प्यार
फिर सुंदर देश छोड़ दो, किसी को भी देश
में जाने मत दो।

अगर नेता हमें नहीं लूटते,
मातृभूमि से कोई दुश्मनी नहीं,
अच्छी सरकार है
फिर सुंदर देश छोड़कर,
किसी को देश नहीं जाना चाहिए।
अगर सबको न्याय मिले, सबका दिल
साफ हो,
फिर सुंदर देश छोड़कर,

किसी को देश नहीं जाना चाहिए।
पैसे के लिए ज़मीर नहीं बेच रहे
विनम्रता और विश्वास नहीं
फिर सुंदर देश छोड़ दो, किसी को भी देश
में जाने मत दो।

हार के न जाऊंगा

हार है तो हार सही, छोड़ सकता जंग नही।
मेरे बिन वो रह सके ,मंज़िल की सामर्थ्य नही।।

आज के दौर के, माना सियासी रंग नही।
राह पलट दूँ उदेश्य के, इतने प्रयास तंग नही।।

जो जो राह में मिला, सारे हमसफ़र नही।
प्रेम भी दुत्कार भी, ये भी यहीं वो भी यहीं।।

क्या साथ लेके आया था,क्या साथ लेके जाऊंगा?
नित नीरव पुष्प खिलाऊंगा ,मैं हार के न जाऊंगा

अक्षिता बहुगुणा

हां मुझे भी कुछ कहना है............

छल- छल बहता जाए कलकल ,
मुझमे दिखता आदित्य व् शशिधर ।
तराने को मधुर सरगम में हूँ परीती ,
नीलमणि की काया ओढे ,
बशर समान जागती कहीं मैं सोती ।
हाँ....मुझे भी कुछ कहना है
अविरल अनंत नित बहना है।
निर्विराम आकांक्षा बशर की , देखो क्या दुःख लाई है
प्रलयंकर भयंकर महामारी मानुष आपने ही बुलाई है ।
मुझे मलिन करके क्या तुमने पाया है?
मुझसे पूछो, हे महानुभाव! क्या मैंने खोया है?
जीव खो दिए ,भूजल खो दिया,
अक्ष खो दिया , मान खो दिया
निसर्ग माँग रही हूँ तुमसे अपना ,लौटा दो मेरा रूप

अब फिर से करते नयी शुरुआत , कर दो धरा अनूप।
इस भयंकर प्रकोप ने तुमको ये सिखलाया है ,
करा करो धरा सम्मान, तुमको ये बतलाया है।
आकाश, वायु, पृथ्वी, जल जिसका खूब किया तुमने अपमान
महामारी को लेकर फिर क्यों होते तुम हैरान ?
याद रखो, मेरी बात फिर तुम पछताओगे
जब देखोगे अपना विनाश, फिर कुछ कह न पाओगे ।
जब एक साथ थे, ईर्ष्या -द्वेष रखते थे
दूसरे को ऊँचा देख फिर तुम परखते थे ।
आज जब तुम जकड़े हो ,रोते हो
हम न रह पाएँगे अकेले !ये कहते हो,
अमृत हूँ मैं,कहता वेद
विष बन गई मैं ,बोलते होता खेद।
छोड़ दो अब तो मनमानी
अब न करो जल हानि

शशांक बाजपाई

पलायन

इस कोरोना महामारी के संकट के समय में आज पूरा विश्व इस महामारी से लडने का प्रयास कर रहा है। लेकिन वही भारत जैसे विकासशील देश को इस महामारी के साथ साथ अन्य समस्या भरी चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। लेकिन सबसे गंभीर एवं चिंताजनक चुनौती जो हमारे सामने उभर कर आ रही है, वह है आर्थिक रूप से असक्षम और गरीब मजदूरों का भारी मात्रा में महानगरों से पलायन करना।
इन कठिन परिस्थितियों में अपनों के बीच पहुंचने की उम्मीद ही उन्हें भूखे,प्यासे, पैदल चलने की हिम्मत दे रही है। इस कठिन समय में पलायन की परिस्थितियों में जिस बात ने मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित एवं प्रभावित किया वह है मजदूर महिलाओं की स्थिति, जिनकी एक अलग प्रकार की छवि हमारे सामने उभर कर आ रही है जिसकी उपेक्षा कतै नहीं की जा सकती।
मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित पंक्तियां- " अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में है पानी...."
यें पंक्तियां हाल ही में उस घटना को याद दिलाती है जिसमें एक गर्भवती महिला मीलों का सफ़र तय करने के बाद एक बच्ची को जन्म देती है। और फिर वास्तविक परिस्थितियों को जानते हुए और अपने घर पहुंचने की उस उम्मीद को लिए निसहाय होकर उस तपती सड़क पर अपनी नवजात बच्ची को लेकर पुनः मीलों का सफ़र तय करती है। यह तो जनाब वह बात हो गई कि "हम तो देख रहे थे शीशा और पीछे हांफ रही थी मछली...."।
यह घटना हमारे सामने एक बहुत ही दयनीय और पीड़ा से भरा एक चित्र खींचती है ।

वही दूसरी ओर हमारे सामने एक और दिलचस्प घटना उभर के आती है, वह है ज्योति, "ज्योति : द फरारी क्वीन"। महज़ एक १५ साल की बच्ची जो अपने बीमार पिता को लेकर १२०० किलोमीटर का सफ़र एक साइकिल पर तय करती है लेकिन उसे नहीं मालूम था कि उसके द्वारा शुरू किया गया यह सफ़र अब रुकने वाला नहीं है। उसके साहस ने,उसके विश्वास ने आज पूरे विश्व में एक संदेश दिया है जिससे आने वाली भावी पीढ़ी प्रोत्साहित होगी, जिसकी कल्पना उसने खुद भी नहीं की थी कि किस प्रकार उसके द्वारा किया गया यह साहस ऐतिहासिक होगा और यह घटना भारत के लिए गौरव का विषय बनेगी।

दोस्तों_यह तो महज़ दो घटनाएं है जिनका जिक्र मैंने अपने लेख में किया है लेकिन ऐसी तमाम घटनाएं जो इस पलायन के समय में घटित हुई और हो रही है, जो महिलाओं के प्रति समाज में उस रूढ़िवादी सोच पर प्रहार करतीं हैं उनका कटाक्ष करतीं हैं और उनका खंडन कर महिलाओं के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण का निर्माण करती है। इस कठिन समय मे जहां लोगों की वैक्तिक और सामाजिक जीवनशैली में बदलाव आ रहा है वहीं महिलाओं की विचारधारा में भी परिवर्तन आना आवश्यक है, क्योंकि यह समय साहसपूर्ण होकर चुनौतियों का सामना करने का है, अपने लिए नए अवसर ढूंढने का है, अपने अस्तित्व को पहचानने का है । अंत में कुछ पंक्तियों के साथ अपने लेख को समाप्त करना चाहूंगा -

"तू खुद की खोज में निकल
तू किसलिए हताश है,
तू चल तेरे वजूद की
समय को भी तलाश है"

धन्यवाद ।
योगेश कुमार
बी.एड, प्रथम वर्ष
Kalka Institute of Research and Advanced studies,
GGSIPU

‘Palayan’

शिक्षक: एक संघर्ष जीवन

कौन कहता है
शिक्षक होना आसान है
हमारे ही उपदेशो से
देश बन रहा महान है

कौन कहता है
शिक्षक होना आसान है
बदलते बदलाव में खुद को
बनाए रखना कहाँ आसान है

कौन कहता है
शिक्षक होना आसान है
हर तरफ आती आवाज़ों में
खुद को शांत रखना कहाँ आसान है

कौन कहता है
शिक्षक होना आसान है
खुद की इच्छा को मार कर
दूसरों की इच्छा पूरा करना कहाँ आसान है

कौन कहता है
शिक्षक होना आसान है
फुर्सतों के लम्हों में भी
काम करना कहाँ आसान है

कनकि कुमार सहि
बी. एड. द्वितीय वर्ष
कमल इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन एंड एडवांस टेक्नॉलाजी

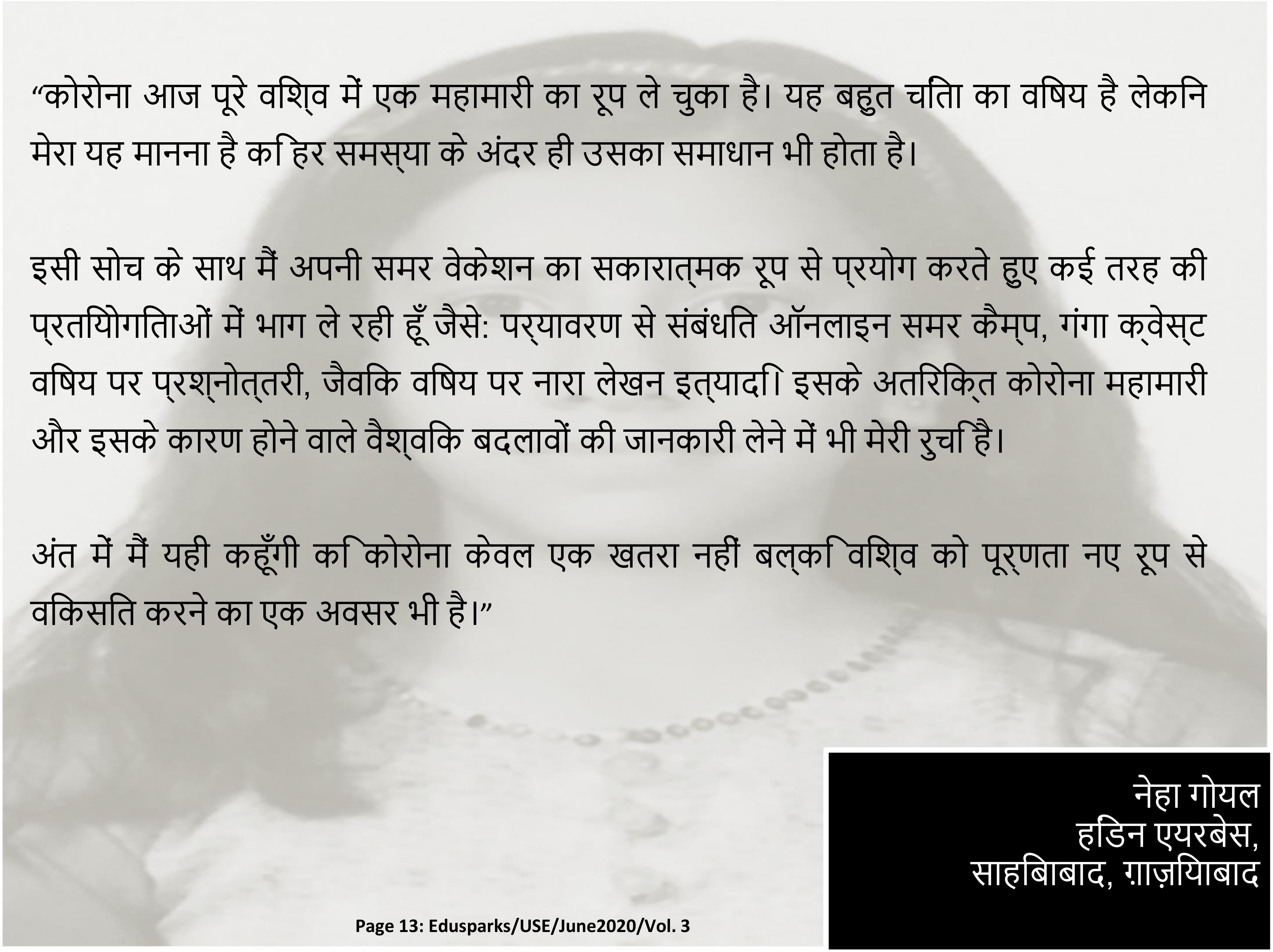

“कोरोना आज पूरे विश्व में एक महामारी का रूप ले चुका है। यह बहुत चिंता का विषय है लेकिन मेरा यह मानना है कि हर समस्या के अंदर ही उसका समाधान भी होता है।

इसी सोच के साथ मैं अपनी समर वेकेशन का सकारात्मक रूप से प्रयोग करते हुए कई तरह की प्रतियोगिताओं में भाग ले रही हूँ जैसे: पर्यावरण से संबंधित ऑनलाइन समर कैम्प, गंगा क्वेस्ट विषय पर प्रश्नोत्तरी, जैविक विषय पर नारा लेखन इत्यादि। इसके अतिरिक्त कोरोना महामारी और इसके कारण होने वाले वैश्विक बदलावों की जानकारी लेने में भी मेरी रुचि है।

अंत में मैं यही कहूँगी कि कोरोना केवल एक खतरा नहीं बल्कि विश्व को पूर्णता नए रूप से विकसित करने का एक अवसर भी है।”

नेहा गोयल
हिंडन एयरबेस,
साहबिबाबाद, ग़ाज़ियाबाद

Vagabonding

One day I will travel,
To the places I have never been.
One day I will travel,
To all the abundant roads into
Deep sea and high sky.
One day I will travel,
To those forests where I would find the luxurious memories.

I will try to explore happiness
At the worst of times.
I will travel to understand the deep history of every
Non existing place.

I will travel to,
The far off waves of a Mediterranean Sea, lap the silken sand,
To the ocean, where I have never been,
To see the wonders of the sunken world below.

One day I will travel to understand the reality
Of world and to bring more humanity in myself.

One day I will travel,
To experience the beauty of nature,
To see flowers dancing to melodies of birds.
To see birds dancing to showers from sky.

One day I will travel far to explore myself more !

Name - Himanshi Bajaj
Course - B.Ed.
College - St. Lawrence College of Higher Education, GGSIPU

I opened a book

I open a book and in I strode
Now nobody can find me.

I have left my chair my house my road
My town and my world behind me.

I am wearing the cloak. I have slipped on the ring,
I have swallowed the magic portion.

I have fought with a dragon, dined with a king and dived in a bottomless ocean.

I opened a book and made some friend
I shared their tears and laughter.

And followed there Road with it bumps and bends
To the happily ever after.

I finish my book and out I came
The clock can no longer hide me.

My chair and my house are just the same,
But I have a book inside me.

- JYOTI SHARMA
B.Ed.

OZONE- THE SPIRIT OF THE SKY

Walking through the woods,
it makes me mesmerized
to see the brilliance of the morning sun
peeping through the veils of tree leaves.
For no such beauty could be seen,
through the soot filled air that our cities breathed.
Sitting by the stream
it makes me overwhelmed
to hear the tinkle of the water passing by.
For no such sounds could be heard
to the half deafened ears of an urban bird
lying under the stars
it makes me elated
to feel the touch of cool breeze blowing.
For no such joy could be felt
in any breeze the chimneys send.
Stuck in everyday routine
when will the truth actually be seen?
To move forth we pushed nature back
a realization was what we needed
and that came in the form of CORONA
which made everyone locked down and see
the ozone layer is vital, indeed.
Maybe we will never understand why,
we were brutally killing
the spirit of the sky.

Name : Harmanpreet Kaur
Class : B.Ed. I year
Section : A

SUDOKO

Directions: Fill in all the squares so that each row, column and box contains the numbers 1 through 9 only once.

	7	2		3	6	4		
	9		7				3	5
			1	8				2
2		6					9	
3		5		9		6		8
	4					5		1
7				2	3			
1	5				4		8	
		8	6	1		9	7	

VISUAL ILLUSIONS

Are the horizontal lines straight or crooked?

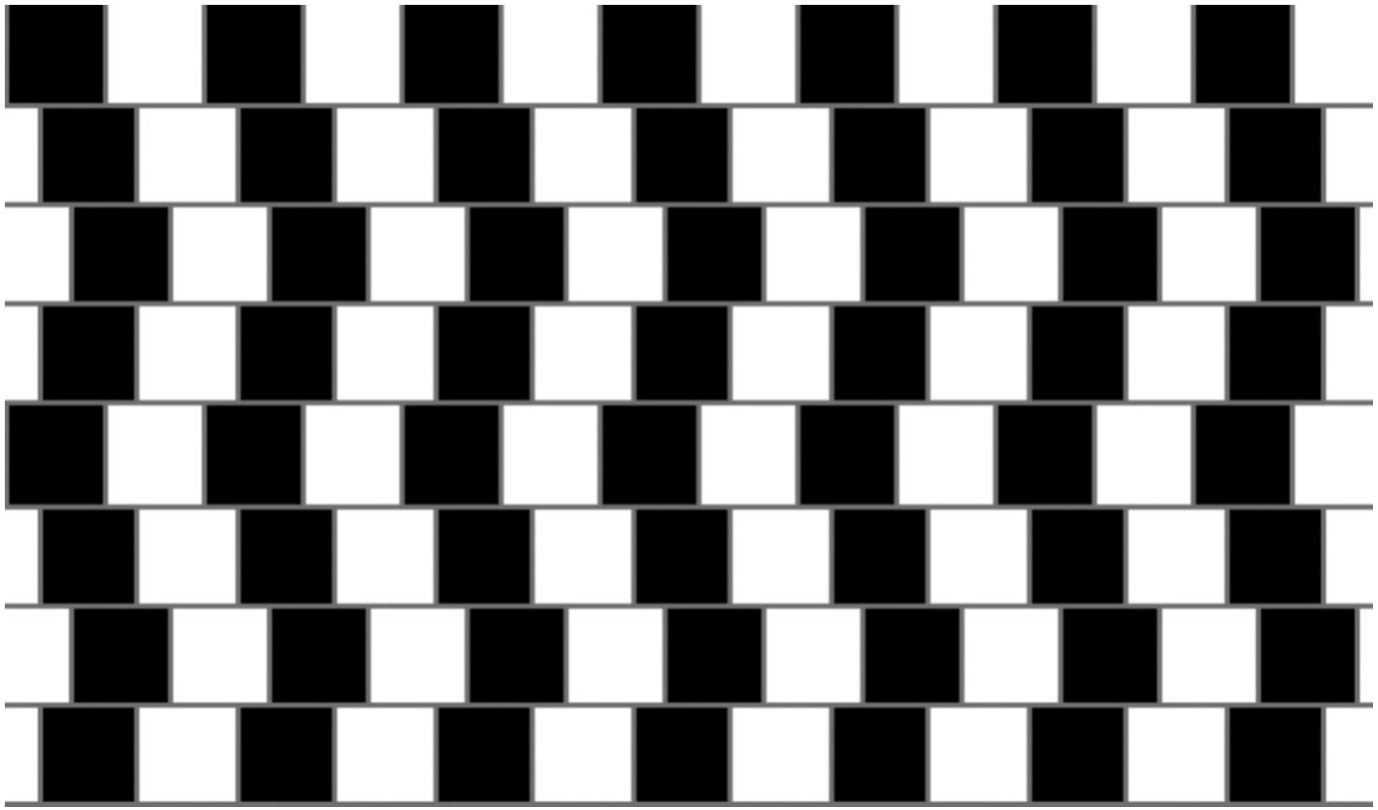

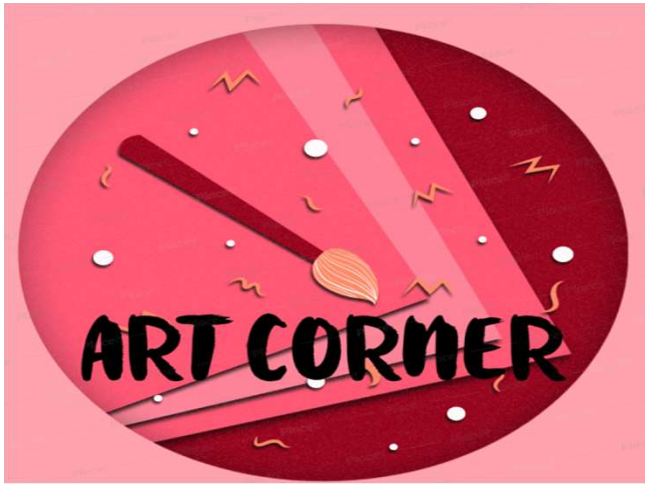

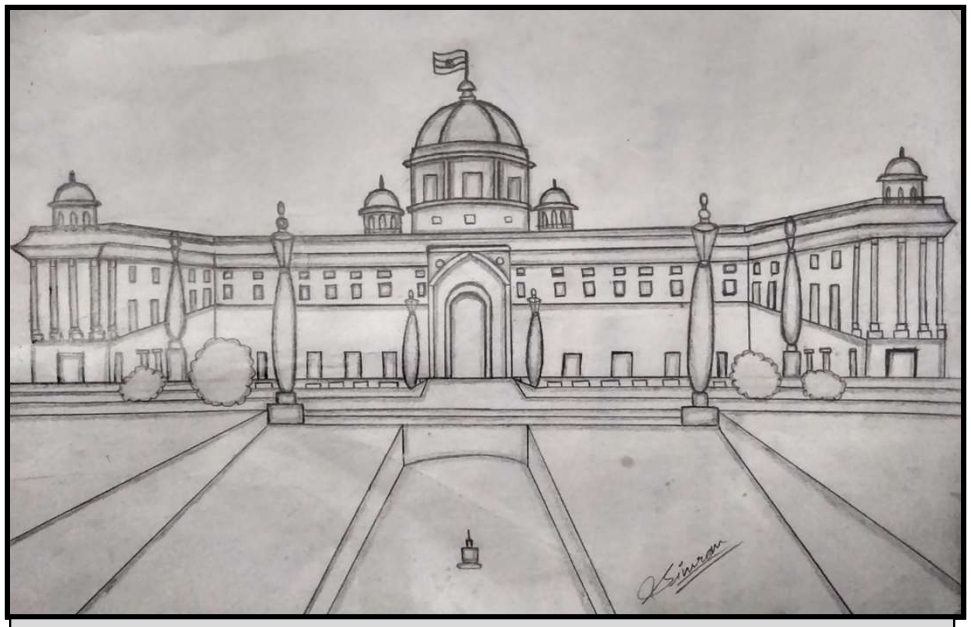

Simran
Student
Bhavan's Leelawati Munshi College Of Education

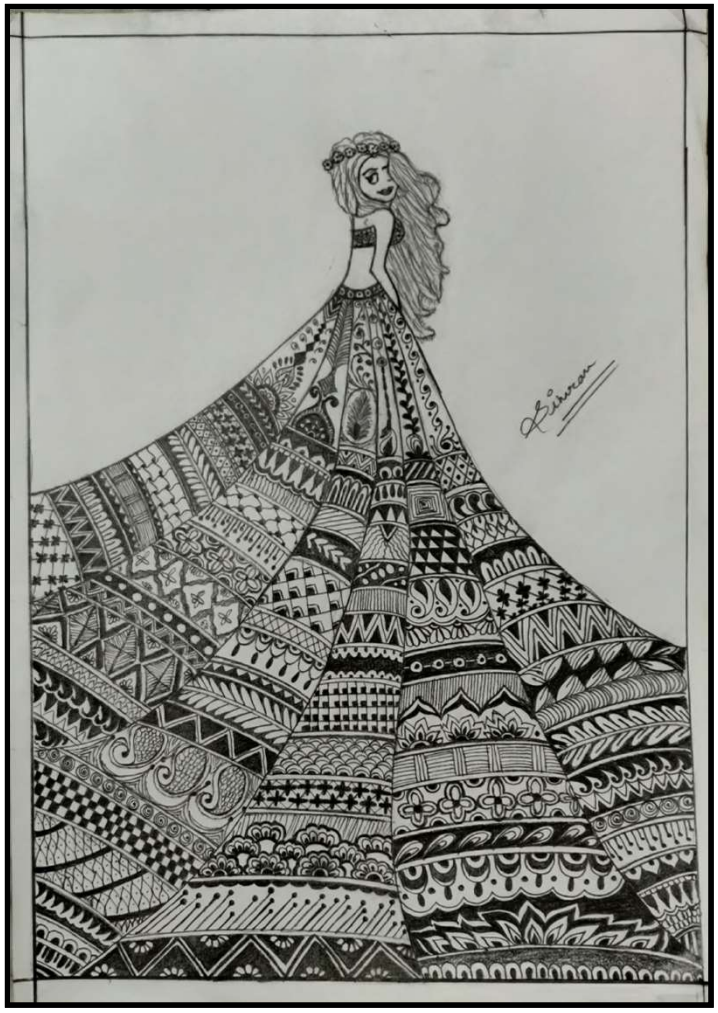

Simran
Student
Bhavan's Leelawati Munshi College Of Education

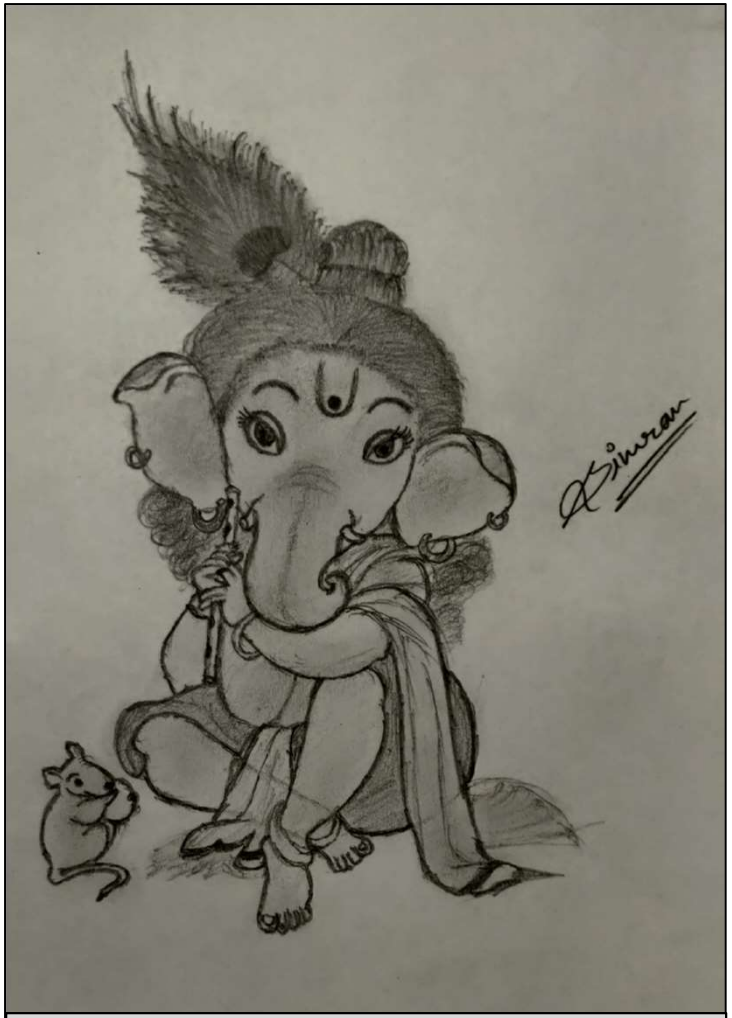

Simran
Student
Bhavan's Leelawati Munshi
College of Education

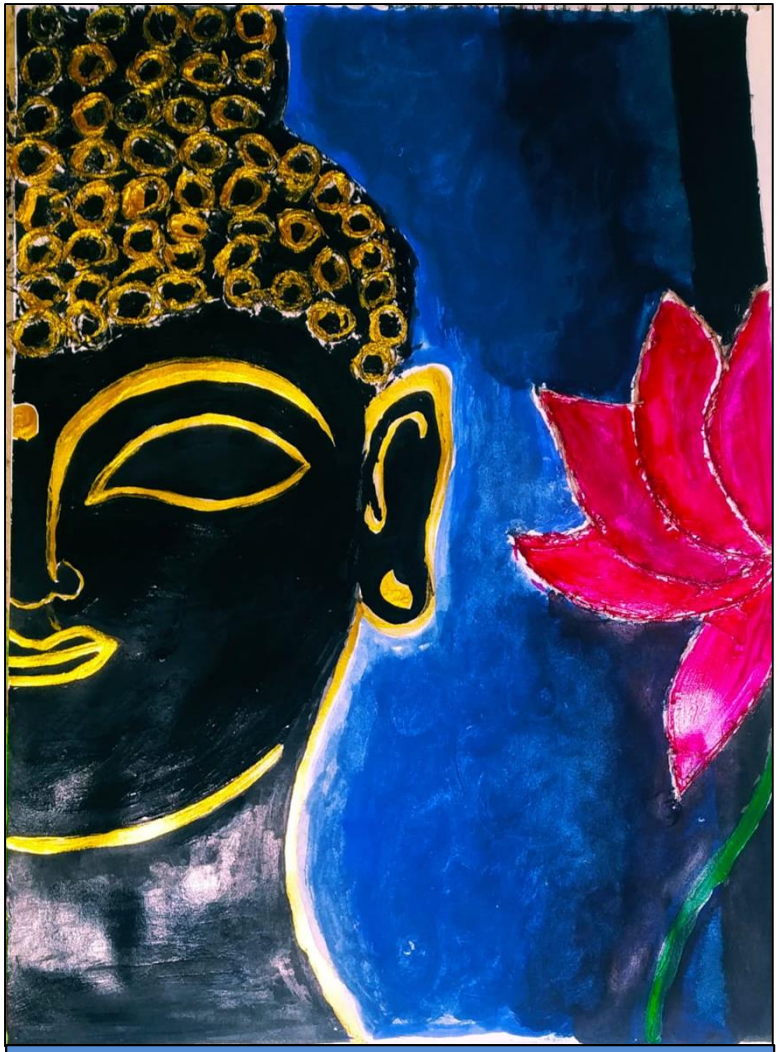

Aashna Rojh
B.Ed 1st year
Varun Dhaka Institute of Technology

Garima
B.Ed 1st year
Gitarattan Institute of Advance Studies and Training, Rohini, New- Delhi

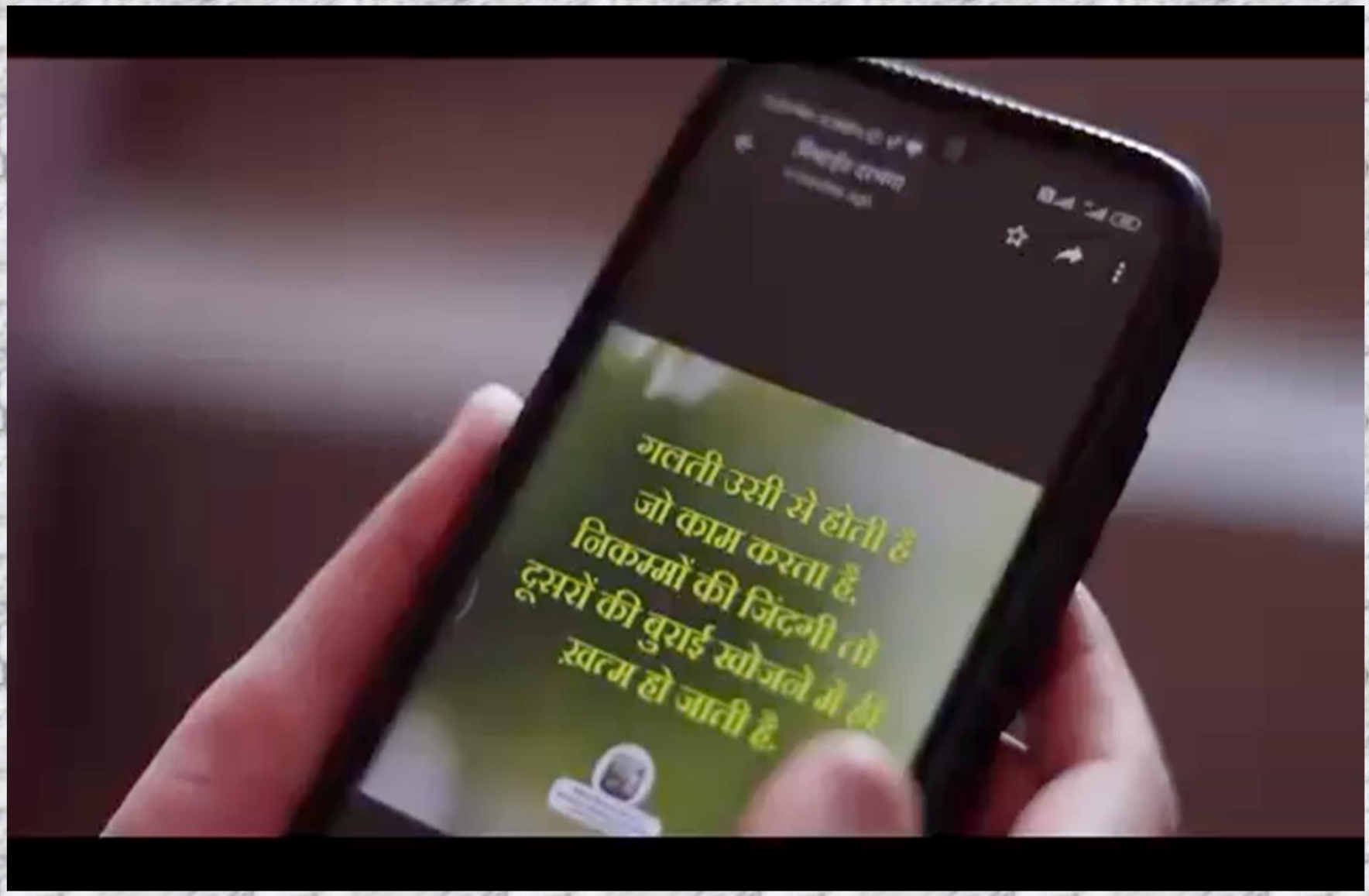

SURBHI PRIYADARSHI
M.Ed – 2nd YEAR
USE, GGSIPU

Content Disclaimer

Please note that the information in Edusparks magazine, including all articles, videos and audios, does not make any claims. Any information offered is expressly the opinion of the creator/author of that material. It is respectfully offered to you to explore, in the hope and with the intention that exploring this material will be educational and helpful to you. If any aspect of the material appears culturally insensitive to any person or group, that is never the intention.

This magazine contains material protected under University School of Education, Guru Gobind Singh Indraprastha University. You may not publish, display, disclose, distribute, or create derivative works based on the magazine contents or any part thereof, whether by yourself or as a consultant, employee, partner or in any other role unless authorised in writing by the creator/author of the article/, video, audio or any content contained herein.

© 2020 All Rights Reserved under University School of education, GGSIPU

To send your contributions and for any further queries, please contact us at:

E-mail: edusparkuseggsipu@gmail.com or professordjoshiipu@gmail.com